राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

www.patheykan.com

माघ शुक्ल 11, वि.2079, युगाब्द 5124, 1 फरवरी, 2023

कर्मयोगी प्रचारक

हस्तीमल जी

(1946-2023)

patheykan@gmail.com patheykan @patheykan1

पाथेय कण रजत जयंती समारोह (2009-10)

उद्घाटन

पूज्य रामदयाल जी महाराज व संवित् सोमगिरी जी महाराज का स्वागत करते हुए

सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत एवं डॉ. दयानन्द भार्गव जी के साथ मंचासीन

जाग्रत ग्राम सम्मान देते हुए

समारोह को संबोधित करते सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत व अन्य अतिथिगण के साथ

समापन

कार्यक्रम शुभारंभ के समय पुष्पांजलि अर्पित करते हुए

कार्यक्रम समापन पर मंचासीन अतिथिगण

पाक्षिक
पाथेय कण

माघ शुक्ल 11 से
फाल्गुन कृष्ण 10 तक
विक्रम संवत् 2079,
युगाब्द 5124

1-15 फरवरी, 2023
वर्ष : 38
अंक : 20

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

सहयोग
संजय सुरोलिया

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष ₹150/-
पन्द्रह वर्ष ₹1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17 (राज.)

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर व्हाट्सएप करें अथवा फोन करें।
(प्रातः10 से सायं 5 बजे तक)
7976582011
विज्ञापन हेतु सम्पर्क
ओमप्रकाश
9929722111

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

संघ के प्रचारक

आज के भौतिक युग में जब चारों ओर सुख-सुविधाओं के लिए, यश-प्रतिष्ठा के लिए या अधिकाधिक धन प्राप्ति के लिए आपाधापी मची हो, तब हैं ऐसे हजारों लोग जो इन आकर्षित करने वाली भिन्न-भिन्न बातों का अपने हृदय पर कोई असर नहीं होने देते। सदैव मोह, दंभ और अभिमान से दूर रहकर राष्ट्र का चिंतन करते हुए सेवा का व्रत लेकर अपने ध्येय की साधना में जीवन भर रत रहते हैं। ये लोग हैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक। संघ के प्रचारक न विवाह करते हैं, न ही कोई नौकरी या व्यवसाय करते हैं। अपना सब कुछ त्याग कर मातृभूमि की जय के लिए ही अपना सम्पूर्ण जीवन जीते हैं। हिंदू समाज को संगठित करने और इस राष्ट्र को परम वैभव पर पहुँचाने का लक्ष्य लेकर संगठन द्वारा दिए गए किसी भी प्रकार के कार्य को सातों दिन और चौबीसों घंटे वर्षानुवर्ष करते रहते हैं। न कोई छुट्टी, न कोई विश्राम। प्रसिद्धि से दूर रहकर बिना किसी पद की कामना के अपनी वाणी और व्यवहार से संघ को साकार करते रहते हैं प्रचारक।

संघ के प्रचारक अपने परिश्रम से स्वयंसेवकों के जीवन में गुण, बुद्धि और कर्त्तृत्व को विकसित करने का प्रयत्न आजीवन करते हैं। इसलिए संघ के द्वितीय सरसंघचालक पूज्य श्री गुरुजी ने प्रचारकों के लिए कहा है, ''जो जो व्यक्ति अपने संपर्क में आया हुआ है, वह जैसा था, उससे अधिक अच्छा हुआ है या नहीं? अच्छा याने ज्ञान की दृष्टि से, जानकारी की दृष्टि से, राष्ट्र के इतिहास को जानने की दृष्टि से, अपने जीवनादर्श की दृष्टि से, राष्ट्रभक्ति के साथ एक ध्येयनिष्ठ जीवन निर्माण करने की दृष्टि से, अपने व्यवहार में अधिक शुद्धता, अधिक स्नेह, अधिक भ्रातृभाव निर्माण की दृष्टि से वह अधिक योग्य बना है अथवा नहीं- ये देखना चाहिए।'' श्री गुरुजी ने यह भी कहा है, ''जब हम अपने क्षेत्र में जाएंगे तो लोग एक उत्कृष्ट जीवन, एक आदर्श जीवन इस नाते से अपनी ओर देख सकें ऐसा व्यवहार करना ही उचित होगा। एक आदर्श राष्ट्रभक्त के नाते अपना सब व्यवहार हो।'' ऐसे ही होते हैं संघ के प्रचारक। श्री गुरुजी का यह मार्गदर्शन उन्हें प्रेरित करता रहता है। इन्हीं आदर्शों को जीते हैं वे।

संघ के वर्तमान सरसंघचालक डॉ.मोहन भागवत कहते हैं, ''प्रचारक जीवन संघ की अपनी विशिष्ट परंपरा है। स्थान, प्रतिष्ठा, श्रेय आदि सब आकांक्षाओं तथा ऐषणाओं को त्याग कर, स्वयं की इच्छाओं को भी त्यागकर, संघ कार्य तथा संघ जीवन में संपूर्ण आत्मसमर्पण करने वाली यह जीवन परंपरा है। ज्येष्ठ प्रचारकों के स्वयं के जीवन के उदाहरण से वह आगे चलती रहती है। ऐसे जीवन के कठोर व्रताचरण के पालन का भी अहंकार प्रचारक को नहीं रहता।'' भागवत जी ने प्रचारकों को 'अपने जीवन को अधिकाधिक निर्दोष व ध्येय समर्पित करने में सतत प्रयासरत जीवन साधक' कहा है। पूर्व सरकार्यवाह श्री सुरेश भैय्या जी ने कहा है, ''प्रचारकों के चिंतन, अध्ययन, लेखन, परिश्रम व समर्पण का विषय संघ ही रहता है। जो कुछ भी अर्जित किया वह केवल और केवल समाज के लिए ही होता है।''

संघ कार्य के प्रारम्भिक वर्षों में स्थान-स्थान पर संघ-कार्यालय नहीं थे। नए स्थान पर प्रचारक जाते तो जहां भी जगह मिलती ठहरते थे। सोने के लिए बहुत बार ठीक-ठाक बिस्तर तक नहीं होता। किसी चटाई या दरी पर ही सो रहते। अपने ही एक हाथ को तकिए की जगह सिर के नीचे रखते। संघ कार्य के विस्तार के साथ जीविकोपार्जन के लिए स्वयं ही कुछ न कुछ करते। संघ के सरकार्यवाह रहे श्री माधवराव मूले अपने प्रचारक जीवन की शुरुआत में महाराष्ट्र के रत्नागिरी में संघ कार्य के साथ-साथ जीवन-निर्वाह के लिए ट्रकों-बसों के ट्यूबों की मरम्मत का काम करते थे। बहुत से प्रारम्भिक प्रचारकों को हमेशा पेट भर खाना शायद ही मिल पाता था। मुट्ठी भर चना-कुरकुरा यही दिन भर का आहार होता था। भूने चने खाकर पानी पी लेने के बाद तृप्ति का अहसास करते। कभी कभी तो यह भी मिलना दूभर होता।

मान्यता है कि बाबा साहब आप्टे संघ के प्रथम प्रचारक थे। नागपुर में वकालत करने वाले पं.बच्छराज जी व्यास (जो मूलतः डीडवाना, राजस्थान के थे) को श्री गुरुजी ने राजस्थान में संघ कार्य के लिए भेजा। वे गृहस्थ होते हुए भी राजस्थान में तीन वर्ष प्रचारक रहे। राजस्थान को पहले प्रांत का दर्जा था जिसे बाद में क्षेत्र बनाया गया। पं. लेखराज जी पहले प्रांत प्रचारक थे। 1959 में श्री ब्रह्मदेव जी आए। उनके बाद श्री सोहन सिंह जी, कृष्ण चन्द्र जी भार्गव(भैय्याजी) और हस्तीमल जी क्रमशः क्षेत्र प्रचारक बने। राजस्थान में संघ कार्य की नींव रखने तथा विस्तार देने में तहसील प्रचारक से लेकर क्षेत्र प्रचारक तक प्रचारक परंपरा का बड़ा योगदान है।

संघ की इसी प्रचारक परंपरा के श्रेष्ठ प्रतिनिधि थे स्व.हस्तीमल जी। वे लोक संग्रही, सूक्ष्म-पैनी दृष्टि वाले, अध्ययनशील, ज्ञानवान, प्रभावी वक्ता, प्रयोगधर्मी, अनुशासन में पक्के परन्तु स्नेही हृदय तथा कार्यकर्ता निर्माण के कुशल कारीगर थे। कार्यकर्ता को अपने स्नेह-सूत्र में बांधकर उसका विकास करते हुए संघ कार्य में प्रवृत्त करते थे। एक सार्थक-प्रेरक जीवन जी कर देवलोक को चले गए। उन्हें शत-शत नमन।●

- रामस्वरूप अग्रवाल

कार्यकर्ता निर्माण की टकसाल थे स्व.हस्तीमल जी

राष्ट्र व समाज समर्पित जीवन को दी भावांजलि

संघ के वरिष्ठ प्रचारक हस्तीमल जी नहीं रहे। उन्होंने 77 वर्ष की उम्र में बीती मकर संक्रांति (14 जनवरी) को अन्तिम सांस ली। हस्ती जी भाई साहब के नाम से लोकप्रिय स्व.हस्तीमल जी हिरण ने हजारों कार्यकर्ताओं को अपने स्नेह-सूत्र में बांधकर राष्ट्र कार्य के लिए प्रेरित किया। उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए कई स्थानों पर श्रद्धांजलि सभाएं आयोजित की गई। राजस्थान के जयपुर में 18 जनवरी को, उदयपुर और बाड़मेर में 16 जनवरी को तथा बांसवाड़ा में 17 जनवरी को ऐसी सभाएं हुई।

इन श्रद्धांजलि सभाओं में बड़ी संख्या में संघ के स्वयंसेवकों के साथ ही संघ विचार से जुड़े संगठनों, समाज की विभिन्न संस्थाओं, राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों तथा गणमान्य लोगों द्वारा स्व.हस्तीमल जी को अपनी भावांजलि दी गई।

जयपुर

जयपुर के अंबाबाड़ी स्थित आदर्श विद्या मंदिर विद्यालय में आयोजित श्रद्धांजलि सभा को संबोधित करते हुए संघ के अ.भा.बौद्धिक शिक्षण प्रमुख श्री स्वांतरंजन ने कहा कि हस्तीमल जी द्वारा कार्यकर्ताओं की संभाल एवं संपर्क की स्नेहपूर्ण पद्धति विशेष रही है। राजस्थान क्षेत्र के संघचालक डॉ.रमेश अग्रवाल ने हस्ती जी के प्रेरणादायक जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उनका संपूर्ण जीवन राष्ट्र व समाज को समर्पित रहा। कार्यकर्ता निर्माण की दृष्टि से प्रवास बनाकर

मिलना उनकी विशेषता थी।

जयपुर महानगर के संघचालक श्री चैन सिंह राजपुरोहित ने कहा कि 'इदं राष्ट्राय इदं न मम' के पर्याय थे हस्तीमल जी। इस अमृत वाक्य को जीवन भर जिया तथा मृत्यु पश्चात् अपनी देह भी समाज कार्य हेतु दान कर दी।

क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम ने संघ के सरसंघचालक डॉ.मोहन भागवत तथा सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले की ओर से प्रेषित श्रद्धांजलि पत्र पढ़कर सुनाया।

सांभर से आए योगी रमणनाथ जी महाराज, रेवासा पीठाधीश्वर राघवाचार्य जी महाराज, राज्य सभा सांसद घनश्याम तिवाड़ी, राष्ट्र सेविका समिति की श्रीमती विजयलक्ष्मी राठी, लघु उद्योग भारती के अ.भा.संगठन मंत्री श्री प्रकाशचन्द्र, पर्यावरण गतिविधि के राष्ट्रीय संयोजक श्री गोपाल आर्य, डॉ.मनोज अग्रवाल आदि कई लोगों ने स्व.हस्तीमल जी के साथ अपने संस्मरण सबके साथ साझा किए।

जैन श्वेतांबर समिति के सहमंत्री श्री राजेन्द्र जैन ने आचार्य महाश्रमण जी तथा महेश मुनी जी का पत्र वाचन करते हुए बताया कि स्व. हस्तीमल जी का जीवन किसी ग्रंथ से कम नहीं था। सभा का समापन रामधुनि और शांतिपाठ के साथ सम्पन्न हुआ। श्रद्धांजलि सभा में सांसद, विधायक आदि कई जनप्रतिनिधि, साधु-संतों, समाज जीवन के विभिन्न वर्गों, संस्थाओं आदि के पदाधिकारी, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों के प्रमुख लोग उपस्थित थे।

पाथेय कण पाक्षिक पत्रिका के संस्थापक संपादक रहे श्री कन्हैयालाल चतुर्वेदी ने कहा कि हस्ती जी कार्यकर्ता गढ़ने की टकसाल थे। उनका पूरा ध्यान इस बात पर रहता था कि कार्यकर्ता श्रेष्ठ कैसे बने। उनकी निरीक्षण शक्ति अद्भुत थी। पाथेय कण पत्रिका को आगे बढ़ाने में उनका विशेष योगदान रहा है।

उदयपुर

उदयपुर के विद्या निकेतन विद्यालय में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में सह सरकार्यवाह डॉ.कृष्ण गोपाल ने स्व.हस्तीमल को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि वे हम लोगों के जीवन में प्रकाश देते हुए हमसे विदा हुए। उनकी संघ के कार्यकर्ताओं से अपेक्षा रहती थी कि वे आगे बढ़ें, अच्छे व्यक्ति बनें। वे कार्यकर्ता निर्माण के धनी थे, सूक्ष्म दृष्टिकर्ता थे, हर पक्ष को बारीकी से देखते थे। कार्यकर्ता के परिवार में सजीव संपर्क

जयपुर

बनाए रखते थे। वे कार्यकर्ता निर्माण की इस अटूट स्नेह-पद्धति के श्रेष्ठ वाहक थे।

भारतीय किसान संघ के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह ने बताया कि स्व.हस्तीमल जी कार्यकर्ता गढ़ने में बारीकी का विशेष ध्यान रखते थे। उनके सिखाने का तरीका बोलकर नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष लोगों को दिखाकर था। लघु उद्योग भारती के अ.भा. संगठन मंत्री श्री प्रकाशचन्द्र ने अपने संस्मरण बताते हुए कहा कि हस्तीजी में मितव्ययिता इतनी थी कि 10 वर्ष पुराने शॉल का उपयोग करते थे। वे लोक संग्रह वाले प्रचारक थे। वे एक चलते-फिरते पुस्तक तीर्थ थे। उन्होंने अपने व्यवहार से बताया कि कैसे प्रेम-स्नेह से लोगों को संघ से जोड़ सकते हैं, यही संघ कार्य का मूल आधार है।

श्रद्धांजलि सभा को संघ के अ.भा.सह शारीरिक शिक्षण प्रमुख श्री जगदीश चन्द्र, राजस्थान क्षेत्र के प्रचारक प्रमुख श्री श्रीवर्द्धन तथा पूर्व महापौर श्रीमती रजनी डांगी ने भी संबोधित किया।

बाड़मेर

बाड़मेर के 'मधुकर भवन' में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में अधिवक्ता अंबालाल जोशी ने कहा कि हस्तीमल जी ने संघ कार्य हेतु दधीचि का जीवन जिया एवं जीवन में सदैव संघ कार्य को प्राथमिकता दी। सह जिला संघचालक श्री मनोहर लाल बंसल, सह नगर कार्यवाह श्री जसवंत सोनी ने भी सभा को संबोधित किया। इस अवसर पर संघ के स्वयंसेवकों सहित बड़ी संख्या में गणमान्य लोग उपस्थित थे।

बांसवाड़ा

बांसवाड़ा के भारत माता मंदिर में बीती 17 जनवरी को आयोजित श्रद्धांजलि सभा में विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय सह मंत्री रामस्वरूप जी महाराज ने हस्तीमल जी से जुड़े अनुभव साझा करते हुए कहा कि ऐसे

॥ ॐ॥

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

प्रधान कार्यालय : डॉ.हेडगेवार भवन, महाल, नागपुर-440032

पौष कृ.10, युगाब्द 5124 — 17.01.2023

श्रद्धांजलि संदेश – श्रद्धेय स्व.हस्तीमल जी

रा.स्व.संघ के अ.भा.कार्यकारिणी के सदस्य रहे स्व.श्री हस्तीमल जी के देहावसान से हमने एक वरिष्ठ प्रेरणादाई व्यक्तित्व को खो दिया। संघ कार्य में अटूट निष्ठा, सतत परिश्रम तथा हंसमुख व्यक्तित्व के नाते वे सदा हमारे स्मरण में रहेंगे। अंतिम दिनों में स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के बावजूद उनके स्नेह, उत्साह, संभाल तथा संवेदनशीलता में किंचित भी कमी नहीं आई और अपने शारीरिक कष्ट को भूलकर देश, धर्म और संघ कार्य की चिंता में ही निमग्न रहे यह सभी के लिए आदर्श है। संघ के सह बौद्धिक प्रमुख व सम्पर्क प्रमुख के दायित्व को निर्वहन किए हस्तीमल जी कार्यकर्ता निर्माण के धनी, सूक्ष्म दृष्टिकर्ता और प्रयोगशील व्यक्ति थे। कार्यकर्ता के परिवार में सजीव सम्पर्क, सबसे बातचीत की सीख देते थे। वे कार्यकर्ता निर्माण की इस अटूट स्नेह की पद्धति के श्रेष्ठ वाहक थे।

अपने सम्पूर्ण समर्पण भाव के फलस्वरूप ही उन्होंने अपने 75वें जन्मदिवस पर नेत्र व देहदान का संकल्प किया था। सम्पूर्ण जीवन संघ के प्रचारक रहते हुए राष्ट्रसेवा में समर्पित करने के बाद मरणोपरांत अपनी देह को भी उन्होंने समाज के हित में दे दिया।

कार्यकर्ता निर्माण एव संभाल करते हुए इस संघ कार्य को द्रुतगति से लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ाना, यही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उनकी पुण्य स्मृति में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से तथा व्यक्तिगत हमारी ओर से हम नमन करते हैं। ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

(मोहन भागवत)
सरसंघचालक

(दत्तात्रेय होसबाले)
सरकार्यवाह

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

प्रधान कार्यालय : 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता-700 001

15 जनवरी,2023

अर्हम्

जन्म लेने वाला प्राणी एक दिन अवसान को प्राप्त होता ही है, यह दुनिया की नियति है। कोई भी प्राणी इसका अपवाद नहीं है।

ज्ञात हुआ कि श्री हस्तीमल जी हिरण का देहावसान हो गया। ये यदा-कदा गुरुकुलवास में आते रहते थे और उनकी श्रद्धा भी अभिव्यक्त होती रहती थी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के भी वे एक विशिष्ट व्यक्ति थे। इस समय उनके सभी पारिवारिक व संबंधीजन धैर्य और मनोबल रखें तथा नमस्कार महामंत्र आदि के जप के द्वारा आध्यात्मिक माहौल निर्मित करने का प्रयत्न करें।

आचार्य महाश्रमण

उदयपुर

उदयपुर

कंटक पथ ही अपनाया

● रमाकान्त शर्मा, जयपुर

एक विलक्षण चेहरा जिस पर,
हर पल रहती थी मुस्कान।
छोड़ गया हम सब के मन में,
वह अपनी विशिष्ठ पहचान।।

सादगी पूर्ण जीवन था उनका,
पर थे उनके उद्‌गार विमल।
ऐसे श्रेष्ठ कर्मयोगी थे हमारे,
मार्गदर्शक श्री हस्तीमल।।

उच्च शिक्षा प्राप्त कर भी,
कंटक पथ ही अपनाया था।
राष्ट्रभाव से युक्त जीवन।
संघ साधना में लगाया था।।

एक विलक्षण कार्यशैली थी,
जो हमको प्रेरित करती थी।
राष्ट्र पोषण की भावनाऐं हम
सबके मन में भी भरती थी।।

जिसको भी सान्निध्य मिला,
वे सभी धन्य हो जाते थे।
उनका शुभ आशीष ले सब,
कर्म क्षेत्र में जुट जाते थे।।

इस मनीषी ने अपना जीवन,
मातृभूमि हित लगा दिया।
अंतिम क्षण में देह दान दे,
सबको मार्ग दिखा दिया।।

एक प्रार्थना हमारी प्रभु चरणों में,
हम सबको भी यह युक्ति दो।
जो मार्ग दिखाया हस्ती जी ने।
उस पर चलने की शक्ति दो।।

संघ शताब्दी पूर्ण होने पर,
देश में शुभ्र वितान तने।
संघर्षों से विजयी होकर,
भारत वर्ष महान बने।।

(लेखक पाथेय कण के पूर्व व्यवस्थापक हैं)

बांसवाड़ा

बाड़मेर

तपस्वियों के बल पर ही आज संघ और भारत राष्ट्र विश्व गुरु बनने की ओर तीव्रता से बढ़ रहा है।

विद्या भारती जनजाति शिक्षा समिति के क्षेत्रीय अध्यक्ष श्री जयंतीलाल भट्ट, वरिष्ठ प्रचारक मनफूल जी, संघ के प्रांत सम्पर्क प्रमुख श्री कृष्णमुरारी गौतम सहित संघ से जुड़े 20 से अधिक विविध संगठनों के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने अपने संस्मरणों के माध्यम से श्रद्धा सुमन अर्पित किए। सभा के प्रारंभ में स्वदेशी जागरण मंच के नवनीत शुक्ला जी ने स्व.हस्तीमल के जीवन वृत्त का वाचन किया। पुष्पांजलि के पश्चात् कमला शुक्ला जी ने शांति पाठ कर सभा का विसर्जन किया।

बारां

बीती 16 जनवरी को बारां के संघ कार्यालय 'केशव कीर्ति' में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ। वनवासी कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय नगरीय संपर्क प्रमुख श्री भगवान सहाय ने संबोधित किया। संघ और समन्वय क्षेत्र के विविध कार्यकर्ताओं ने भी श्रद्धा सुमन अर्पित किए। सभा के अंत में दो मिनट का मौन रखा गया। ●

बारां

एक

हस्तीमल जी 1974 में जयपुर में नगर सायं प्रचारक होकर आए थे। तब मैं एलएलबी में अध्ययनरत था। राजस्थान विश्वविद्यालय के छात्रावासों में रहने वाले विद्यार्थियों की शाखा विवेकानंद छात्रावास के पीछे सुबह-सुबह लगती थी। इस शाखा में कई बार हस्ती जी का आगमन हुआ। हम लोग शाखा विकिर के बाद विवेकानंद छात्रावास की कैंटीन के सामने घेरा बनाकर कुर्सियों पर हस्ती जी भाईसाहब के साथ सुबह की धूप सेका करते तथा संघ व देश के ज्वलंत विषयों पर चाय पर चर्चा होती। भाई साहब एक-एक स्वयंसेवक का परिचय बड़े ही स्नेह से पूछते थे। हस्ती जी के मार्गदर्शन से यह शाखा मजबूत होती गई।

1975 में आपातकाल लगा। आम लोगों में व्याप्त भय को कम करने तथा भूमिगत आंदोलन के समाचार लोगों तक पहुँचाने के लिए समय समय पर 'लोक वाणी' पत्रक छाप कर बांटने की योजना बनी थी। आंदोलन से संबंधित प्राप्त समाचारों को संपादित कर पत्रक तैयार करने का कार्य मेरे जिम्मे था। इस कार्य में वरिष्ठ प्रचारक धनप्रकाश जी तथा हस्ती जी का मार्गदर्शन मिलता था। चांदपोल दरवाजे के पास स्थित अनाज मंडी में स्व. रामकल्याण जी मिर्धा की दुकान के ऊपर बने आवास में हम लोग मिलते थे और पत्रक निर्माण का कार्य करते थे। वहीं से हजारों की संख्या में पत्रक विभिन्न स्थानों पर भेजे जाते थे। हस्ती जी के कहने पर ही राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर के गीत की पंक्तियां 'समर शेष हैं, नहीं पाप का भागी केवल व्याध, जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध' हर बार पत्रक में देना आरंभ किया।

अध्ययन समाप्त कर मैं कॉलेज में प्राध्यापक हो गया था। हस्ती जी भाई साहब कभी-कभी दूरभाष पर किसी राष्ट्रीय समाचार पत्र में देश-समाज के लिए महत्वपूर्ण विषय पर प्रकाशित लेख के बारे में पूछते कि उस लेख को पढ़ा है क्या? कहते, पढ़ो उसे। मिलने पर दो-तीन बार उन्होंने स्वयं किसी ऐसे ही लेख की कटिंग भी मुझे अध्ययन करने के लिए दी। इस प्रकार कार्यकर्ता के बौद्धिक स्तर को विकसित करने का वे प्रयत्न करते थे। पाथेय कण के संपादक का दायित्व आने पर मैं उनसे प्रकाशित करने योग्य सामग्री पर चर्चा के लिए मिलने गया। बदलते समय के अनुसार कैसी सामग्री दी जाए, इस पर विस्तार से चर्चा हुई तथा उनका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उनसे परिचित सभी कार्यकर्ताओं ने उनका स्नेह प्राप्त किया। संस्मरण कई हैं। ऐसे महामानव-निश्चल प्रेम के सागर हस्तीमल जी हिरण को सादर नमन। स्व. हस्तीमल जी गीत की निम्नलिखित पक्तियाँ जीवन पर्यन्त सार्थक करते रहे-

शुद्ध सात्विक प्रेम अपने कार्य का आधार है।
दिव्य ऐसे प्रेम में ईश्वर स्वयं साकार है।।

- रामस्वरूप अग्रवाल
संपादक - पाथेय कण

दो

एक बार हस्तीमल जी आदर्श विद्या मंदिर, राजापार्क के सभागार में कार्यकर्ताओं के परिवारजन कार्यक्रम में आए। उस सभागार में 22 महापुरुषों के चित्र लगे थे। उन्होंने परिवारजन से उन सभी महापुरुषों पर परिचयात्मक प्रश्न पूछे और फिर उन सब महापुरुषों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी। इतनी गहरी समझ कोई विरले तपस्वी में ही हो सकती है। वे अपने हंसमुख स्वभाव से सभी को अपना बना लेते थे।

- डॉ. रमेश अग्रवाल,
क्षेत्र संघचालक,राजस्थान

तीन

अखिल भारतीय सम्पर्क प्रमुख के नाते जब हस्तीमल जी का जयपुर आना हुआ तो मैंने अपने निवास पर उन्हें आमंत्रित किया। उन्होंने नाराजगी प्रकट करते हुए कहा,''ऐसे कैसे घर बुला रहे हो, मैं नहीं चलता आपके घर'' मैं सकते में आ गया। ''कुछ भले लोगों को इकट्ठा करो, जिनसे बातें करें, गपशप करें, सम्पर्क करें।'' उन्होंने यह भी बता दिया कि ऐसे लोगों को बुलाना जो पहले से संघ के सम्पर्क में नहीं हों। मैंने राजस्थान पुलिस के लगभग 20 पुलिस अधिकारियों के साथ अपने निवास पर एक बैठक रखी। उस बैठक से जो अनुभव महसूस किया वह अद्भुत अनुभव था। उस बैठक में कुछ संघ विरोधी भी थे। आदरणीय हस्तीमल जी ने लगभग एक घंटा उनसे चर्चा की। विरोधी विचार रखने वालों को सबसे ज्यादा प्रभावित किया। सहज-सरल रूप में उन्होंने सबको संघ दर्शन करा दिया था। बैठक के बाद सभी गद्गद् थे। वे सभी लोग फिर से उनका कार्यक्रम रखने का मुझ से आग्रह करते रहे। दुर्भाग्य से नियति ने ऐसा अवसर नहीं दिया। 'इदं राष्ट्राय इदं न मम' को अंगीकार करने वाले आदरणीय हस्ती जी भाई साहब को हार्दिक श्रद्धांजलि।

- चैनसिंह राजपुरोहित,
महानगर संघचालक, जयपुर

राष्ट्र साधक हस्तीमल जी का जीवन वृत्त

हस्तीमल जी का जन्म राजसमंद जिले में चंद्रभागा नदी के दक्षिण तट पर आमेट कस्बे में श्रावणी पूर्णिमा, वि.सं.2003 (12 अगस्त, 1946) को हुआ। वे मेधावी छात्र थे। 1964 में आमेट से हायर सेकेंडरी पास करने से लेकर 1969 में संस्कृत में एमए करने तक प्रथम श्रेणी प्राप्त की। एमए में उन्होंने 'गोल्ड मेडल' प्राप्त किया था। बीए तक मेरिट स्कॉलरशिप तथा एमए में नेशनल स्कॉलरशिप प्राप्त की।

वे किशोरावस्था में ही संघ के स्वयंसेवक बन गए थे। हायर सेकेंडरी के बाद उन्होंने नागपुर में संघ के तृतीय वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त किया और प्रचारक हो गए। उन्होंने प्रचारक रहते हुए अध्ययन जारी रखा। स्वयंसेवकों को भी वे सतत अध्ययन के लिए प्रेरित करते रहते थे। अगले एक दशक तक उदयपुर में संघ के विभिन्न उत्तरदायित्वों सहित जिला प्रचारक रहे।

1974 में वे जयपुर भेजे गए। आपातकाल के बाद अगले 23 वर्षों तक जयपुर आपका केंद्र बना रहा और यहां आप नगर प्रचारक, विभाग प्रचारक, संभाग प्रचारक, सह प्रांत प्रचारक, प्रांत प्रचारक, सह क्षेत्र प्रचारक और क्षेत्र प्रचारक रहे।

राष्ट्रीय स्तर पर जब आपकी आवश्यकता महसूस की गई तो जुलाई 2000 में आपको अखिल भारतीय सह बौद्धिक प्रमुख की जिम्मेदारी दी गई। 2004 से 2015 तक आप अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख रहे। इसके बाद राष्ट्रीय कार्यकारिणी से जुड़े रहे। यह सुखद संयोग रहा कि हस्तीमल जी को ब्रह्मदेव जी, सोहन सिंह जी और जयदेव जी पाठक जैसे वरिष्ठ प्रचारकों के सान्निध्य में कार्य करने का अवसर मिला। ये तीनों कर्मठता-अनुशासन और निष्ठा के संगम थे, जिन्होंने हस्तीमल जी जैसे निष्ठावान प्रचारक का निर्माण किया।

आपातकाल के दौरान जयपुर के विभाग प्रचारक सोहन सिंह जी के साथ जयपुर के नगर प्रचारक हस्तीमल जी भूमिगत आंदोलन का नेतृत्व करते हुए सक्रिय थे। पुलिस तत्परता से उन्हें खोज रही थी। जौहरी बाजार क्षेत्र के कार्यकर्ताओं की बैठक होनी थी। दोनों प्रचारक मोटर साइकिल से यथासमय बैठक स्थल पर पहुंचे। बाहर मोटर साइकिल खड़ी करके रुके ही थे कि पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। दोनों को गिरफ्तार करके जयपुर सेंट्रल जेल में रखा गया।

राजस्थान में लगभग चार दशक तक प्रचारक रहने के दौरान उन्होंने अनुशासन, अध्ययन, पारदर्शिता, दृढ़ निश्चय और गांव-गांव तक संघ कार्य विस्तार पर अधिक जोर दिया। कार्यकर्ताओं से घर-घर जीवंत संपर्क और सुख-दुख में उनकी संभाल को उन्होंने अपनी दिनचर्या में शामिल कर रखा था।

पाक्षिक पत्रिका 'पाथेय कण' को प्रारंभ करने में मुख्य भूमिका उन्हीं की रही थी। राजस्थान के ज्यादातर स्थानों पर पहुंच रखने वाले सर्वाधिक प्रसार संख्या वाले इस पाक्षिक की विषय वस्तु से लेकर प्रबंधन तक की समस्त भूमिका की नींव उन्होंने ही रखवाई। शिक्षा का माध्यम संस्कृत होते हुए भी वे हिसाब-किताब में चार्टर्ड एकाउंटेंट की तरह सूक्ष्मतापूर्वक ध्यान रखते थे। एक बड़ा पाक्षिक बिना हानि के कैसे नियमित चलाया जा सकेगा, यह सूक्ष्म दृष्टि उन्होंने प्रारंभ से ही रखी।

ज्ञान गंगा प्रकाशन के विकास-विस्तार में उन्हीं की योजना रही। राजनीति को लेकर वे दृढ़ विचारों के रहे। संघ की परंपरा के अनुसार किसी विषय पर राय देने तक ही उन्होंने अपने को सीमित रखा।

संस्कृत के प्रति उनका विशेष अनुराग था। वे कहते थे - ''संस्कृत भाषा विज्ञान की भाषा और गणितीय भाषा है। इसकी सूत्र पद्धति अनोखी है। भारतीयों का परिचय संस्कृत में निहित ज्ञान और विज्ञान से ही है। एक दिन संस्कृत का डंका विश्व भर में बजेगा।''

इसी मकर संक्रांति (माघ कृष्ण सप्तमी, वि.सं.2079) यानि 14 जनवरी,2023 को प्रातः 7:30 बजे उदयपुर स्थित संघ कार्यालय 'केशव निकुंज' में इस यज्ञमय जीवन का अवसान हुआ। ●

देह भी कर दी दान

हस्तीमल जी की इच्छा के अनुसार परिवारजनों व संघ अधिकारियों ने पार्थिव देह आरएनटी मेडिकल कॉलेज, उदयपुर में दान की। उन्होंने 75 वें जन्मदिवस (12 अगस्त,2021) पर नेत्र व देहदान का संकल्प लिया था। अंतिम दर्शन के लिए पार्थिव देह उदयपुर के संघ कार्यालय में रखी गई। शाम तक स्वयंसेवकों सहित बड़ी संख्या में समाजजनों ने श्रद्धासुमन अर्पित किए। सायं 5 बजे कार्यालय से

देहदान संकल्प पत्र भरते हुए

उनकी अंतिम यात्रा प्रारंभ होकर मेडिकल कॉलेज पहुँची, जहाँ उनकी देह समर्पित की गई। इस समर्पण से पहले ही उनके निधन के पश्चात् उनके नेत्रदान किए गए। इस दौरान उनकी बड़ी बहन सोहन देवी सांखला, भतीजे कन्हैयालाल हिरण, सुरेश हिरण, विनोद हिरण, भांजे ललित सांखला, भांजी अनीता सांखला उपस्थित थे। मेडिकल कॉलेज के एनाटॉमी विभागाध्यक्ष डॉ.परवीन ओझा के साथ डॉ. सीमा प्रकाश, डॉ.श्वेता अस्थाना, डॉ. सौरभ जैन व डॉ.सुनील शर्मा ने देहदान की प्रक्रिया पूरी की।

हस्तीमल जी को जाता है
पाथेय कण के विकास का श्रेय

पाथेय कण के संस्थापक संपादक रहे श्री कन्हैयालाल चतुर्वेदी पाथेय कण पत्रिका के विकास का सम्पूर्ण श्रेय श्रीमान् हस्तीमल जी को देते हैं। वे बताते हैं कि प्रकाशन के 4-5 माह बाद ही हस्तीमल जी ने प्रभारी के नाते पाथेय-कण की देखभाल शुरू कर दी थी। तब कन्हैया जी रिजर्व बैंक में कार्यरत होने के साथ ही महानगर कार्यवाह का दायित्व भी संभाल रहे थे। कार्य की अधिकतावश कभी उन्हें समय नहीं मिलता तो हस्तीजी स्वयं इस पत्रिका के संपादन-प्रकाशन का कार्य करते। 4-5 वर्षों तक ऐसा ही चलता रहा। कन्हैया जी के अनुसार राम मंदिर की कार सेवा के समय निकले पाथेय कण अंकों का संपादन हस्ती जी ने ही किया था। 1992 से संपादक का संपूर्ण दायित्व कन्हैया जी ने संभाल लिया था, परंतु हस्ती जी लगातार सार-संभाल करते रहे।

पाथेय कण को बनाया आर्थिक रूप से मजबूत

प्रारंभ के वर्षों में पाथेय कण सदस्यता शुल्क लिए बिना ही वितरित किया जाता था। हस्तीजी ने इसे आत्मनिर्भर बनाने के लिए वार्षिक और आजीवन सदस्यता शुल्क का प्रावधान कराया। पाथेय कण जब जयपुर के चौमूं हाउस स्थित अपने कार्यालय से प्रकाशित होता था तब हस्ती जी कार्यालय में बैठकर पाथेय कण की सदस्यता और हिसाब-किताब भी देखते थे। 1989 में वरिष्ठ प्रचारक श्री माणकचन्द प्रबन्ध संपादक के नाते पाथेय कण से जुड़े। माणक जी बताते हैं कि इस पत्रिका की सदस्यता बढ़ाने में और कई वर्षों तक विज्ञापन संबंधी कार्य में हस्ती जी का बड़ा योगदान रहा। जब उनके पास संघ का अखिल भारतीय दायित्व आया तो उन्होंने देश भर में पाथेय कण के सदस्य बनाए।

कन्हैया जी का मानना है कि हस्ती जी के प्रयासों से शीघ्र ही पाथेय कण न केवल आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बना वरन पुराने पाथेय भवन (वर्तमान मधुकर भवन) क्रय करने में भी सहयोग किया गया। पाथेय कण को तब एक बड़ा कार्यालय प्राप्त हुआ। पाथेय कण की प्रसार संख्या भी निरंतर बढ़ती गई।

कन्हैया जी बताते हैं कि हस्ती जी ने प्रकाशित होने वाली सामग्री के संबंध में कभी कोई हस्तक्षेप नहीं किया। हालांकि, यह उनका स्वभाव था कि प्रकाशन के पश्चात् प्रत्येक अंक को पूरा पढ़ते थे और कहीं कुछ कमी नजर आती तो उस ओर संपादक का ध्यान अवश्य खींचते थे ताकि आगे उसमें सुधार हो जाए। प्रत्येक अंक पर उनसे संपादक जी की प्रत्यक्ष या दूरभाष पर चर्चा होती रहती थी। वे संपादक व प्रबन्ध संपादक के प्रति पूरा विश्वास रखते थे। जहां अच्छी सामग्री की प्रशंसा करते थे, वहीं नए प्रयोगों को भी प्रोत्साहित करते थे। पाथेय कण के मालवीय नगर में बने नए भवन का भूमि पूजन हो या रजत जयंती वर्ष के कार्यक्रम, सभी अवसरों पर हस्तीमल जी उपस्थित रहते थे।

(श्रीमान् कन्हैयालाल चतुर्वेदी से संपादक की बातचीत के आधार पर)

आरएनटी मेडिकल कॉलेज की ओर देहदान यात्रा

माओवादियों के लिए राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा के निहितार्थ

जैसे-जैसे देश में लेफ्ट यानि कम्युनिस्ट विचारधारा का ग्राफ नीचे गिरता गया, उन्होंने कांग्रेस को अपनी राजनीतिक वैशाखी बनाने से परहेज नहीं किया। हालांकि, आश्चर्यजनक रूप से यह सांठगांठ केवल केंद्र में ही दिखाई देती है। राज्यों में जहां कहीं भी कम्युनिस्ट विचारधारा के दलों का कोई ठोस अस्तित्व रहा है, वहां कांग्रेस के विरोध में खड़े होने से इन्होंने कभी गुरेज नहीं किया।

कुल मिलाकर सुविधा की राजनीति और गठबंधन से ना तो कांग्रेस और ना ही कम्युनिस्टों को ही कोई समस्या है। इस क्रम में हिंसा के माध्यम से सत्ता पाने की कवायद में लीन प्रतिबंधित माओवादी संगठन कम्युनिस्ट पार्टी भी कोई अपवाद नहीं और बीते दिनों इस हिंसक संगठन ने अपनी मासिक पत्रिका में इसे खुल कर दर्शाया भी है।

माओवादियों ने अपनी मासिक पत्रिका 'पीपुल्स मार्च' में खुलकर राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा की प्रशंसा की।

नक्सलियों ने राहुल एवं कांग्रेस की सॉफ्ट हिन्दुत्व की छवि को लेकर उन्हें घेरा भी है, पत्रिका में राजस्थान एवं छत्तीसगढ़ में सत्तासीन कांग्रेस के नरम हिन्दुत्व की छवि को उसके विकल्प के रूप में सबसे बड़ी बाधा बताते हुए माओवादियों ने कांग्रेस नेतृत्व से सहानुभूति जताई है।

दशकों से समाज को धर्म, संप्रदाय, रंग, भाषा अथवा भौगोलिक आधार पर बांटने के पीछे अपनी सारी शक्ति झोंकने वाले माओवादियों के लिए राहुल आशा की आखिरी किरण जैसे हैं, जिनके आधार पर वे संगठित होते समाज को तोड़ने का यथासंभव प्रयास कर रहे हैं। यह बताने की आवश्यकता नहीं कि देश के नागरिकों का संस्कृति, राष्ट्रीयता, देशभक्ति, धार्मिक अथवा किसी भी अन्य आधार पर संगठित होना ही उस कथित क्रांति के लिए सबसे बड़ा खतरा है, जिसका सपना भारत के कम्युनिस्ट बुद्धिजीवी दशकों से देख रहे हैं।

इसमें भी दो राय नहीं कि वर्ष 2014 में

केंद्र की सत्ता में मोदी सरकार आने के बाद सरकार ने ना केवल जमीनी स्तर पर सक्रिय माओवादियों की सैन्य इकाई पीएलजीए के विरुद्ध बड़े स्तर पर सुरक्षाबलों की तैनाती को मजबूत किया है, अपितु समानांतर रूप से माओवादियों के कथित शहरी बुद्धिजीवी वर्ग (अर्बन नक्सलियों) के विरुद्ध भी मुहिम छेड़ रखी है, अब ऐसे में वर्तमान सरकार का सत्ता से हटना माओवादियों के लिए तो जैसे अस्तित्व बचाने का संघर्ष है।

इसलिए कतई अस्वाभाविक नहीं कि यात्रा की शुरुआत से लेकर अब तक वैचारिक रूप से माओवाद का समर्थन करने वाले वर्ग के पोस्टर बॉय रहे योगेंद्र यादव एवं पूर्व कॉमरेड कन्हैया कुमार जैसे लोग राहुल गांधी के साथ कदमताल करते दिखाई दिए। रही सही कसर मेधा पाटकर, फिल्म जगत में कम्युनिस्टों की पोस्टर गर्ल स्वरा भास्कर, कुणाल कामरा, प्रशांत भूषण जैसों ने पूरी की है। इन सब में वैचारिक रूप से एक समानता है कि ये सभी भारत विरोधी पक्ष रखने अथवा ऐसी किसी मुहिम को वैचारिक समर्थन देते आये हैं।

इतिहास की दृष्टि से देखें तो भी कांग्रेस में कम्युनिस्ट विचारों के पैराकारों की घालमेल कोई छिपी बात नहीं है। नेहरू के कथित आदर्शवाद की नीति से लेकर, इंदिरा गांधी के जमाने का सोवियत आयातित समाजवाद, कम्युनिस्ट झुकाव वाले इतिहासकारों की देख-रेख में शिक्षा नीति का विकास आदि, सब कहीं ना कहीं कांग्रेस के भीतर कम्युनिस्ट घुसपैठ की रणनीति का ही बखान करते हैं। हालांकि इस संदर्भ में महत्वपूर्ण यह भी है कि सांस्कृतिक मार्क्सवाद के इस युग में सत्तासीन दलों में कम्युनिस्ट कैडरों की घुसपैठ कम्युनिस्टों की टाइम टेस्टेड रणनीति का भाग रही है। यह अपवाद स्वरूप भाजपा सरीखे दलों पर ही लागू नहीं होता।

अब ऐसे में माओवादियों द्वारा राहुल गांधी की मुक्त कंठ से की गई प्रशंसा एवं समानांतर रूप से सॉफ्ट हिन्दुत्व की उनकी आलोचना को उनके अस्तित्व बचाने की वेदना से जोड़ कर देखा जा सकता है।

देश के वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में अस्तित्व बचाने का जितना संघर्ष माओवादी कर रहे हैं, कमोबेश वही स्थिति कांग्रेस की भी है। मूल अंतर केवल इतना ही है कि जहां कांग्रेस सॉफ्ट हिन्दुत्व से लेकर येन-केन प्रकारेण केवल केंद्र में अपनी वापसी चाहती है तो वहीं माओवादियों के लिए भय केवल इस बात का है कि यदि यह वापसी सॉफ्ट हिन्दुत्व के रास्ते हुई तो उनके लिए सामाजिक ताने-बाने को तोड़कर क्रांति की कल्पना भी दूर की कौड़ी बनकर ही रह जाएगी। बावजूद इसके कॉमरेडों को इस बात का भी बखूबी भान है कि यदि सत्ता के इस संघर्ष में वह 2024 की लड़ाई हार जाते हैं तो उनका अस्तित्व कहीं बस कागजों तक ना सिमट जाए। ●

इंडोनेशिया में हजारों मुस्लिम बने हैं हिंदू

सनातन धर्म में विश्व को देने के लिए बहुत कुछ है–रवि कुमार

संघ की शताब्दी यात्रा पर हुआ संवाद

जनवरी माह में जयपुर में सम्पन्न हुआ था ज्ञानम फेस्टिवल। दूसरे दिन इसमें चर्चा का विषय रखा गया–'सामाजिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शताब्दी यात्रा'। मंच संचालक पत्रकार जितेश जेठानंदानी के एक प्रश्न के उत्तर में संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री रवि कुमार ने कहा कि हिंदू समाज की संघ से बड़ी अपेक्षा है। आगामी 20 वर्षों में अनेक कार्य होने वाले हैं। वैश्विक रूप से भी आगामी 20 वर्ष में ऐतिहासिक निर्णय होंगे।

उन्होंने बताया कि पिछले 30 वर्षों में इंडोनेशिया के 10 हजार से ज्यादा लोगों ने मुस्लिम मजहब छोड़कर हिंदू धर्म अपनाया है। इंडोनेशिया राजघराने की बेटी 5 हजार लोगों के साथ हिंदू धर्म में 2–3 माह पूर्व आई है। जावा की एक राजकुमारी 7 हजार लोगों को लेकर 2 वर्ष पूर्व हिंदू बनी थी। यूक्रेन और रूस के बीच चल रहे युद्ध के दौरान बड़े पैमाने पर वहां के लोगों ने हिंदू धर्म अपनाया है। श्री रवि कुमार ने विश्व में बढ़ रहे हिंदुत्व के प्रभाव की चर्चा करते हुए कहा कि जहां एक भारतवंशी इंग्लैण्ड का प्रधानमंत्री बन गया है, वहीं दुबई में कुछ दिनों पूर्व बने स्वामीनारायण मंदिर में 5 हजार से ज्यादा दूसरे सम्प्रदायों के लोगों ने दर्शन किए हैं। सबसे पहले दर्शन करने वालों में वहां के शासक–सुल्तान के परिवार के लोग थे। विश्व प्रसिद्ध कम्पनी एप्पल के सीईओ स्टीव जॉब्स तथा फेसबुक के सीईओ मार्क जुकरबर्ग ने उत्तराखंड स्थित कैंची धाम आश्रम के नीम करोली बाबा से प्रेरणा ली थी। आज विदेश में कई बड़ी–बड़ी कम्पनियों के सीईओ भारतीय हैं। कई भारतीय विदेशी कम्पनियों को खरीद रहे हैं। आने वाले 20 वर्षों में ईरान के करोड़ों लोग हिंदू धर्म को अपनाएंगे। सनातन धर्म में विश्व को देने के लिए बहुत कुछ है, जिससे प्रभावित होकर विश्व हिंदू बन सकता है।

समाज संघ के कार्यों में बढ़–चढ़कर भाग ले रहा है– डॉ.रमेश अग्रवाल

ज्ञानम के इसी सत्र में संघ के क्षेत्र संघचालक डॉ.रमेश अग्रवाल ने कहा कि यद्यपि संघ के प्रारम्भिक काल में उसकी उपेक्षा हुई तथा बाद में राष्ट्र विरोधियों ने संघ का विरोध भी खूब किया परंतु अब समाज न केवल संघ के कार्य को अच्छा बताने लगा है, अपितु संघ के कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा भी ले रहा है।

संघ कार्य में है महिला भागीदारिता

संघ के कार्यक्रमों एवं निर्णयों में महिला भागीदारिता के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए डॉ. रमेश अग्रवाल ने बताया कि यद्यपि 1925 में पुरुषों के लिए संघ की स्थापना हुई परंतु 1936 में ही महिलाओं के लिए राष्ट्र सेविका समिति नाम से संगठन बना जिसमें महिलाएं ही सभी कार्य करती हैं और निर्णय लेती हैं। संघ के सम्पर्क, प्रचार और सेवा कार्य विभागों में मातृशक्ति की सहभागिता रहती है तथा संघ के स्वयंसेवकों द्वारा विविध क्षेत्रों में बनाए गए विभिन्न संगठनों में भी मातृशक्ति की बड़ी सहभागिता है।

श्री राजीव तुली ने कहा कि संघ में महिला सहभागिता का प्रश्न वैसा ही है कि भारतीय क्रिकेट टीम का कप्तान महिला कब बनेगी? परंतु समाज चाहेगा तो संघ की लीडरशिप में महिलाएं शामिल होंगी। संघ जितना फ्लैक्सीबल और एडजस्टेबल कोई और संगठन नहीं है।

संघ में समाज के सभी वर्गों के लोग हैं

एक अन्य प्रश्न के उत्तर में डॉ. रमेश अग्रवाल ने कहा कि हमारे यहां जाति नहीं पूछी जाती। संघ शिक्षा वर्ग में खाने की पंगत में बगल में किस जाति का स्वयंसेवक बैठा है या भोजन परोसने वाला किस जाति का है, ऐसा विचार किसी को नहीं आता। संघ में हिंदू समाज की सभी जाति–बिरादरी के लोग हैं।

संघ हिंदू समाज में होगा विलीन

श्री रवि कुमार ने कहा कि संघ समाज से अलग कोई गुट नहीं है। यह समाज का संगठन है। संघ के जो प्रश्न हैं, जैसे लव जिहाद, मतांतरण, पर्यावरण प्रदूषण, भ्रष्टाचार, माता–बहिनों के साथ दुराचार आदि वे समाज के ही प्रश्न हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उद्देश्य समाज को इतना समर्थ और चेतनावान बनाना है कि वह इन सारी चुनौतियों का सामना कर सके। जिस दिन समाज इतना सामर्थ्यशाली और चेतनायुक्त हो जाएगा, उस दिन संघ समाज में समाहित हो जाएगा। इसलिए संघ कभी भी संघ की जय हो या संघ जिंदाबाद ऐसा नहीं बोलता। संघ हमेशा ही भारत माता की जय बोलता है। श्री राजीव तुली ने दत्तोपंत जी के कथन को दोहराया, जिन्होंने कहा था कि इक्कीसवीं शताब्दी संघ की होगी, आज वैसा ही दिखाई देने लगा है। ●

गरीबों के लिए दाह-संस्कार व्यवस्था

कठिन समय में सहायता के लिए आगे आई सेवा भारती

जब कोई अपना संसार से चला जाता है तो परिवार पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ता है। यदि वो अपने प्रिय को ठीक से अंतिम विदाई भी न दे सके तो उसकी पीड़ा की कल्पना भी मुश्किल है।

बात 6 मार्च, 2021 की है, जब केरल के छोटे से गांव अन्डोरकोनम में एक बुजुर्ग व्यक्ति रंगराजन (परिवर्तित नाम) कोरोना से जिंदगी की जंग हार गए। विडंबना देखिए, बीमारी की लड़ाई से बड़ी लड़ाई उनके परिवार को अपने प्रियजन के अंतिम संस्कार के लिए लड़नी पड़ी। परिजन सारी कोशिशें करके हार गए किंतु किसी श्मशान घाट में उनके शव के अंतिम संस्कार के लिए जगह नहीं मिली। तब उन्होंने थक हारकर इसके लिए सेवा भारती, केरल से मदद मांगी। नतीजन चंद घंटों में ही एक वैन के रूप में 'मोबाइल अंतिम संस्कार यूनिट' उनके दरवाजे पर खड़ी थी। केवल दो एलपीजी सिलेंडर का उपयोग कर कार्यकर्ताओं की मदद से रंगनाथन जी के परिजनों ने उनका अंतिम संस्कार संपन्न किया।

सेवा इंटरनेशनल की मदद से चलाया जा रहा केरल सेवा भारती का यह 'चिताग्नि प्रोजेक्ट' राज्य के 13 जिलों में उन परिवारों के लिए वरदान बनकर आया है, जो अपने परिजनों की अंतिम क्रिया अपने घर के बैकयार्ड में करने के लिए विवश थे। केरल सेवा भारती के अध्यक्ष किरण कुमार जी बताते हैं कि 'चिताग्नि' एक इको-फ्रेंडली यूनिक प्रोजेक्ट है जिसमें अंतिम संस्कार के लिए लकड़ियों की जरूरत नहीं पड़ती।

मृत्यु तो सदैव ही कष्ट लेकर आती है। परंतु दाह-संस्कार के लिए श्मशान में जगह न मिले तो प्रियजनों के दुःख की कोई सीमा नहीं रहती। केरल में छोटी-छोटी बस्तियों में रहने वाले लोग कई वर्षो से इस मर्मांतक दर्द से गुजर रहे हैं। इन्हें अंतिम विधान के लिए श्मशान घाट में जगह नहीं मिलती। ऐसे में वे अपनी छोटी सी जमीन पर ही अपने प्रियजन को अंतिम विदाई देते हैं। किसी -किसी को 10 किलोमीटर दूर जाकर सुनसान जगह पर शवों की अंतिम क्रिया करनी पड़ती है।

कोरोना-काल में यह समस्या विकट हो गई थी। केरल सेवा भारती ने सेवा इंटरनेशनल की मदद से 'चिताग्नि प्रोजेक्ट' ऐसे ही परिवारों की मदद के लिए 2019 में शुरू किया। इस अनूठे ' मोबाइल अंतिम संस्कार यूनिट' (श्मशान गृह) को जरूरतमंद परिवारों तक लगभग निःशुल्क पहुंचाने का कार्य केरल सेवा भारती कर रही है। दक्षिण क्षेत्र के क्षेत्र सेवा प्रमुख श्री पद्मकुमार बताते हैं, ''केरल में सेवा भारती सिर्फ इसी काम के लिए एक अलग से हेल्पलाइन चला रही है, जिस पर आए दिन फोन कर लोग अंतिम संस्कार के लिए मदद मांगते हैं।'' वे बताते हैं कि तंग बस्तियां हों या फिर सुदूर वनवासी क्षेत्र, यह मोबाइल शवदाह गृह बगैर विलंब के वहां तक पहुंच जाता है।

इस योजना को भविष्य में दक्षिण भारत के 100 जिलों तक पहुंचाने की योजना बन चुकी है। ●

अमृतकाल में जम्बूद्वीप-दिव्य भव्य भारत

सामाजिक चुभते विषयों पर हुई चर्चा और संवाद

50 से अधिक विशेषज्ञों ने की सहभागिता

संघ को हिन्दुत्व सिखाते नव हिन्दुत्ववादी, उभरता भारत- बिखरता चीन, गोदी मीडिया को दफनाती मोदी सरकार जैसे समसामयिक विषयों पर 32 सत्रों में भारत के 50 जाने-माने व्यक्तित्वों ने की चर्चा और संवाद। अवसर था जयपुर के निधीश गोयल द्वारा संचालित यू-ट्यूब चैनल 'जम्बू टॉक्स'पर आयोजित 'अमृतकाल में जम्बूद्वीप-दिव्य भव्य भारत' परिचर्चा का। परिचर्चा में स्त्री विमर्श, मजहबी पागलपन, साहित्य, समर नीति, इतिहास, राजनीति आदि कई विषयों पर विमर्श हुआ। इस विमर्श में प्रसिद्ध पत्रकार रतन शारदा, ऑर्गेनाइजर पत्रिका के संपादक प्रफुल्ल केतकर, लोक गायिका पदमश्री मालिनी अवस्थी, दर्शन शास्त्र के विद्वान प्रो.रामेश्वर मिश्र 'पंकज' व प्रो.कुसुमलता केडिया, लेखक एवं कॉलमनिस्ट राजीव तुली, हिंदू जन जागृति संस्था के रमेश शिंदे, सनातन संस्था के चेतन राजहंस, मधु किश्वर, डॉ.ओमेन्द्र रत्नू आदि अपने-अपने क्षेत्र के महारथियों ने सहभागिता की। इस विचार-विमर्श को यू ट्यूब Jamboo Talks चैनल पर देखा जा सकता है।

संघ प्रमुख ने कहा - नेताजी के सपनों को पूरा कर रहा है आरएसएस

सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा है कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जीवन वैभवशाली भारत निर्माण के लिए कष्ट सहने, तपस्या करने और पूर्ण समर्पण का आदर्श उदाहरण है। जिस वैभवशाली

उदयपुर

वामपंथी इतिहासकारों और सेकुलर राजनीतिज्ञों का

एजेण्डा था भारतीय इतिहास को विकृत करना

भारत केन्द्रित इतिहास अध्ययन के द्वारा ही नई पीढ़ी में भारतीय जीवन मूल्यों को स्थापित किया जा सकता है। इतिहास के विकृतिकरण में अंग्रेजों, वामपंथी इतिहासकारों और सेकुलर राजनीतिज्ञों का अपना एजेण्डा था। यह कहना है भारतीय इतिहास संकलन समिति के राष्ट्रीय संगठन सचिव डॉ.बालमुकुंद पाण्डे का। वे बीती 12 जनवरी (युवा दिवस) को उदयपुर में 'भारतीय संस्कृति, शिक्षा और जीवन मूल्यों के संरक्षण व संवर्धन में इतिहास की भूमिका' विषय पर आयोजित संगोष्ठी को सम्बोधित कर रहे थे।

डॉ. पाण्डे का कहना था कि अब हम इतिहासकारों का कर्त्तव्य है कि हम उसका शुद्धिकरण कर राष्ट्रीय गौरव के उत्थान हेतु भारतीय चिति के आलोक में भारत का प्रामाणिक इतिहास लिखें।

इतिहास संकलन योजना द्वारा आर्य आक्रमण सिद्धांत की अप्रामाणिकता, भारतीय कालगणना की प्राचीनता, सरस्वती नदी की विद्यमानता और अंतःसलिला प्रवाहमान निरन्तरता की स्थापना तथा भारतीय संस्कृति के विश्व भर में संचार की तथ्यात्मक जानकारी डॉ. पाण्डे ने दी।

इस अवसर पर इतिहास संकलन योजना की ओर से 'विद्यार्थी इतिहास परिषद्' का गठन कर इतिहास के युवा शोधार्थियों का सम्मान किया गया। गोष्ठी में देशभर के ख्यातनाम इतिहासकारों ने सहभागिता की।

भारत के निर्माण का सपना नेताजी सुभाष ने देखा, उसी को लेकर संघ आगे बढ़ रहा है। नेताजी चाहते थे कि व्यक्ति निर्माण कर समाज को सशक्त बनाया जाए और संघ यही कर रहा है। पराक्रम दिवस पर (23 जनवरी को) संघ की ओर से कोलकाता के शहीद मीनार मैदान में कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

मेवाड़ टॉक फेस्ट

प्रत्येक भारतीय पर है 'सुभाष ऋण'

आजाद हिंद फौज व सुभाष के कारण अंग्रेजों को छोड़ना पड़ा था भारत

नेताजी कुशल लेखक और पत्रकार भी थे

नेताजी सुभाष के प्रभाव में ही ब्रिटिश-भारत की सेना के भारतीय सैनिकों ने अंग्रेजों के विरुद्ध संग्राम छेड़ दिया था। 1928 में नेताजी ने सर्वप्रथम कांग्रेस अधिवेशन में पूर्ण स्वराज की मांग रखी। उन्होंने स्वाधीन भारत के प्रथम सरकार का गठन किया। वस्तुतः आजाद हिंद फौज व सुभाष के पराक्रम के चलते अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा। इसलिए प्रत्येक भारतीय पर 'सुभाष ऋण' भी है। सुभाष के सपनों के भारत की बात की जाए तो उसमें राष्ट्र को आर्थिक, सामरिक, तकनीकी व सामाजिक रूप से संबल बनाना होगा। यह कहा है प्रो. भगवती प्रसाद शर्मा ने। अवसर था 'मेवाड़ टॉक फेस्ट' का जो 23 जनवरी को उदयपुर के सीटीएई सभागार में संपन्न हुआ।

इस सत्र का विषय था 'सुभाष के सपनों का पराक्रमी भारत।' आईआईएमसी की प्रो. संगीता प्रणवेंद्र ने डॉ. शर्मा के साथ मंच साझा करते हुए कहा कि नेताजी सुभाष कुशल लेखक, पत्रकार एवं विवेचक भी थे। नेताजी का पत्रकारिता के प्रति लगाव था। वे छद्म नाम से फॉरवर्ड ब्लॉक में संपादकीय लिखते रहे तथा आजाद हिंद रेडियो की स्थापना की जिसमें भारतीय युवाओं में स्वाधीनता की लौ जलाई। आजाद हिंद रेडियो के विरुद्ध बीबीसी को ईस्टर्न सर्विस सेंटर शुरू करना पड़ा। फेस्ट में नेताजी के जीवन पर डॉक्यूमेंट्री फिल्म का प्रदर्शन किया गया। इस सत्र में उपस्थित युवाओं ने अपने विचारों से विभिन्न भारतीय सरकारों की नेताजी के प्रति भूमिका पर प्रश्न खड़े किए।

जनसंख्या बदलाव से बढ़ा आंतरिक खतरा

फेस्ट के तृतीय सत्र में 'भारत की आंतरिक व बाह्य सुरक्षाः चुनौतियां एवं रणनीति' पर चर्चा हुई। चर्चा में भाग लेते हुए अभिनव पण्ड्या ने कहा कि जनसांख्यिकीय बदलाव से आंतरिक खतरा बढ़ा है। दूरस्थ सीमावर्ती क्षेत्रों से बड़े शहरों की ओर पलायन हो रहा है। ऐसे में सीमा क्षेत्रों से बड़े शहरों की ओर पलायन हो रहा है, जिससे क्षेत्रों की पहचान में परेशानी हो सकती है। हमें आर्थिक, राजनैतिक एवं सैन्य क्षेत्रों को मजबूती देनी होगी।

वरिष्ठ पत्रकार आनंद नरसिम्हन फेस्ट में भाग नहीं ले सके। विजिबिलिटी कम होने के कारण उनकी फ्लाइट उदयपुर में लैंड नहीं हो सकी। फेस्ट में युवाओं ने बड़ी संख्या में सहभागिता की। नेताजी के जीवन पर आधारित पुस्तकों की स्टॉल पर युवाओं की भीड़ देखी गई। फेस्ट में ऋतम एप, जनजातीय महिलाओं द्वारा हस्तनिर्मित क्राफ्ट, ऑर्गेनिक फूड एवं उत्पाद के स्टॉल भी लगाए गए।

राष्ट्र भाव जगाने हेतु तीन हजार स्वयंसेवकों ने मिलाए कदम से कदम

नागौर में निकला ऐतिहासिक पथ संचलन

3000 स्वयंसेवकों ने लिया भाग | **16** बस्तियों से एक ही समय निकला संचलन | **65** किलोमीटर से अधिक की कुल दूरी की तय

बीती 15 जनवरी (मकर संक्रांति पर्व पर) को नागौर शहर की 16 अलग-अलग बस्तियों से समाज में आत्मविश्वास व साहस का संचार करने वाले पथ संचलन निकाले गए। दोपहर के समय निकले इन 16 संचलनों में तीन हजार स्वयंसेवकों ने राष्ट्रभाव का जागरण करने हेतु कदम से कदम मिलाकर समाज में समरसता के साथ-साथ राष्ट्र प्रेम का संदेश दिया।

एक ही समय सभी स्थानों से निकले संचलनों का शहर के मुख्य मार्गों, चौराहों पर सजी रंगोलियों व बने हुए स्वागत द्वारों पर पुष्प वर्षा कर स्थानीय नागरिकों व बड़ी संख्या में पहुंची मातृशक्ति द्वारा स्वागत किया गया। इस दौरान सभी ने भारत माता की जय सहित अन्य उद्घोष लगाए।

शहर की विभिन्न बस्तियों में निकाले गए संचलनों में भारतीय सभ्यता व संस्कृति को प्रदर्शित करती माता शबरी के हाथों बेर खाते श्रीराम, स्वामी विवेकानन्द और उनका गुरु परिवार, राष्ट्र रक्षा में समर्पित भारतीय सैनिक व भारत माता की आकर्षण झांकियों ने हर किसी को आकर्षित किया।

ऐतिहासिक पथ संचलन

ऐसा पथ संचलन **नागौर** में पहली बार इतनी बड़ी संख्या में निकला था। सभी संचलनों द्वारा तय की गई दूरी 65 किलोमीटर से अधिक रही।

ताउसर बस्ती में निकले संचलन में मातृशक्ति द्वारा झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की झांकी तथा भारतीय पारम्परिक वेशभूषा में बुलेट मोटर साइकिल पर नेतृत्व करती मातृशक्ति संचलन का विशेष आकर्षण थी। ब्रह्मपुरी (महालक्ष्मी बस्ती) क्षेत्र से निकले संचलन में भारतीय परम्परागत वाद्य यंत्रों शंख, वंशी, आनक, पणव, झांझ, त्रिभुज आदि शास्त्रीय रचना के साथ चल रहे संचलन ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा।

चंडावल (पाली)

चंडावल में भी मकर संक्रांति पर स्वयंसेवकों के संचलन व एकत्रीकरण का आयोजन किया गया। संचलन में रायपुर, सांडिया, मुरडावा, दोरनड़ी, करमावास, उदेसी कुंआ, गुड़ाबच्छराज के सैकड़ों ग्रामीण स्वयंसेवकों ने भाग लिया। एकत्र स्वयंसेवकों को लाम्बियामठ के लक्ष्मणनाथ जी महाराज ने संबोधित किया।

फलौदी

फलौदी के खींचन खण्ड में मकर संक्रांति पर 'तरुणोदय' नाम से कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम को संघ के क्षेत्र प्रचारक श्री निंबाराम ने संबोधित करते हुए कहा कि मकर संक्रांति उत्सव का अर्थ है कि हम सब हिंदू समाज के लोग समरसता का भाव भरकर संगठित रहे और मां भारती को परम वैभव तक पहुंचाने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ें।

इस अवसर पर जाम्भाणी विद्यापीठ , जैसला के भागीरथदास जी शास्त्री ने हिंदू समाज द्वारा समरसता का भाव भरकर ध्येय मार्ग पर अग्रसर होने का आह्वान किया। कार्यक्रम में सैकड़ों कार्यकर्ता व स्थानीय नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

सामाजिक समरसता

सेवा भारती का अभियान

भीख मांगने और कचरा बीनने वालों के लिए स्वरोजगार की व्यवस्था

बेटी के विवाहोपलक्ष्य में तीन लोगों को शुरु कराया स्वरोजगार

अनूपगढ़ की सेवा भारती संस्था पिछड़ी बस्ती के लोगों को भीख मांगने और कचरा बीनने के कार्य से मुक्ति दिलाने के लिए उनके स्वरोजगार की व्यवस्था करने हेतु प्रयासरत है। इस हेतु सेवा भारती द्वारा समाज के संपन्न लोगों को प्रेरित किया जा रहा है।

इस क्रम में अनूपगढ़ के नारायण दास भंसारी ने अपनी बेटी के विवाह पर पिछड़ी बस्ती के तीन व्यक्तियों (ओमप्रकाश, बलजिंद्र सिंह एवं गुरजिंदर सिंह) को चाय-नाश्ते की दुकान खुलवाते हुए उन्हें स्वरोजगार उपलब्ध कराकर उदाहरण प्रस्तुत किया। इस हेतु उन्होंने 50 हजार रुपये खर्च किए। नारायण दास भंसारी वर्तमान में सेवा भारती तहसील के सहमंत्री पद पर कार्यरत हैं। उनके दामाद दिनेश चन्द्र तथा बेटी विनीता ने दीप प्रज्वलित कर तीनों के स्वरोजगार का शुभारंभ कराया।

सालासर धाम

भारत की एकता-अखंडता के लिए हुआ 1008 कुंडीय महायज्ञ

पाक अधिकृत कश्मीर के भारत में सम्मिलन के लिए की गई कामना

प्रसिद्ध संत स्वामी रामभद्राचार्य जी की प्रेरणा और संकल्प पूर्ति के निमित्त 1008 कुंडीय महायज्ञ का आयोजन सिद्ध भूमि श्री सालासर बालाजी धाम (जिला चूरू) में किया गया। विशेष बात यह रही कि इस यज्ञ का आयोजन समाज की वर्तमान चुनौतियों के परिहार तथा भारत की एकता-अखंडता के लिए श्री हनुमान जी महाराज को सवा करोड़ आहूतियां दी गईं। स्वयं श्री स्वामी रामभद्राचार्य जी ने अपने प्रवचन में बताया कि यह यज्ञ पाक अधिकृत कश्मीर का भारत के साथ फिर से सम्मिलन की कामना से प्रेरित है।

विगत 12 से 20 जनवरी तक हुए इस यज्ञ एवं रामकथा के दौरान जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानन्द जी, श्री गुरु शरणानन्द जी, गोकुल, गीता मनीषी श्री ज्ञानानन्द, जगद्गुरु द्वाराचार्य श्री राजेन्द्र दास जी महाराज, वृंदावन सहित कई प्रसिद्ध साधु-महात्माओं की उपस्थिति रही।

यज्ञ और रामकथा की इस पावन सरिता में लाखों भक्तों ने डुबकी लगाई तथा भारत की एकता व अखंडता के लिए कार्य करने का संकल्प लिया। यज्ञ का आयोजन राघव परिवार द्वारा किया गया।

जयपुर

पूर्व सैनिक सेवा परिषद ने नेताजी सुभाष को याद किया

अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद राजस्थान ने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के जन्मदिन (पराक्रम दिवस) को समारोह पूर्वक मनाया। कार्यक्रम में भारत की स्वतंत्रता के लिए नेताजी के योगदान पर चर्चा की गई।

सैनिक परिषद का यह कार्यक्रम जयपुर के प्रताप नगर स्थित माहेश्वरी गर्ल्स पीजी कॉलेज प्रांगण में आयोजित किया गया। सैनिक परिषद के पालक अधिकारी श्री अमर सिंह राजपुरोहित, मेजर जनरल (रि.) श्री अनुज माथुर तथा पाथेय कण के प्रबंध संपादक श्री माणकचन्द तथा कॉलेज के पदाधिकारियों ने समारोह को संबोधित किया।

इस अवसर पर लड़कियों के लिए सेना में रोजगार के अवसरों पर भी चर्चा की गई।

श्रद्धांजलि

धर्मवीर जी धींगरा का देवलोकगमन

उदयपुर के धर्मवीर जी धींगरा संघ के वरिष्ठ प्रचारक थे। 1954 से लेकर 1975 (21 वर्षों) तक प्रचारक रहे। 1975 से 1977 तक आपातकाल में उदयपुर में संगठन का गुप्त रूप से काम किया। धर्मवीर जी का प्रचारक जीवन सीकर व झुंझुनूं विभाग छोड़कर आज का सारा जयपुर प्रांत कार्यक्षेत्र रहा। धर्मवीर जी को राजस्थान क्षेत्र का बौद्धिक प्रमुख का भी दायित्व रहा।

विशेष परिस्थितिवश आपको प्रचारक जीवन से गृहस्थ जीवन में लौटना पड़ा। 1952 में आपकी सगाई हुई थी। 2 वर्ष सगाई रहने के बाद जब विवाह का समय नजदीक आया तो आप 1954 में राष्ट्र सेवा का संकल्प ले प्रचारक बन गए। जब यह बात भावी जीवन संगिनी को पता चली तो उन्होंने प्रण धारण किया कि शादी करूंगी तो उन्हीं से अन्यथा कुंवारी ही रहूंगी।

उनके मामाजी प्रतिवर्ष संघ के सरसंघचालक श्री गुरुजी से उनके प्रण की बात बताकर धर्मवीर जी को वापस भेजने का निवेदन करते। 1975 में आपातकाल के समय उन्हें विवाह कर घर बसाने के लिए कहा गया। विवाह के पश्चात् उन्होंने 1977 से 2000 तक विद्या भारती का कार्य किया।

पाथेय कण परिवार उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

प्रसिद्ध अभिनेता नितीश भारद्वाज को पाथेय कण का नवीनतम अंक (16 जनवरी) भेंट करते संस्कार भारती के प्रांत कार्यकारी अध्यक्ष श्री आत्माराम सिंहल

सेवा भारती, कोटपूतली का बाल संस्कार केन्द्र

सीसवाली (बारां) में राष्ट्रीय युवा दिवस (12जनवरी) पर रक्तदान

22 जनवरी को दौसा में निकाला गया द्विधारा गंगा-यमुना पथ संचलन

बांसी, भण्डेडा (बूंदी)

कालबेलिया दम्पत्ति की दुर्घटना में मृत्यु होने पर अनाथ बालिका को दिया सहारा

भण्डेडा, बांसी के रहने वाले सीताराम कालबेलिया और उसकी पत्नी लाछाबाई की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो जाने के कारण उनकी एकमात्र संतान, उनकी बेटी से मिलकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं ने सांत्वना दी तथा 50 किलो आटा एवं 1200 रुपए की सहयोग राशि देते हुए भविष्य में भी बालिका की शिक्षा एवं पालन-पोषण का भरोसा बालिका के रिश्तेदार को दिया।

बालोतरा (बाड़मेर)

समाज व राष्ट्रहित में हो सोशल मीडिया का उपयोग

सम्पूर्ण विश्व में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म प्रचार-प्रसार का सशक्त माध्यम बन चुका है। इस प्लेटफॉर्म का सदुपयोग कैसे हो, किस प्रकार की सामग्री इसके माध्यम से लोगों तक पहुँचे जो समाज एवं राष्ट्रहित में हो, इस प्रकार की जानकारी शॉर्ट फिल्म एवं विडियो के माध्यम से बीती 24 जनवरी को अरावली मोशन्स एवं विश्व संवाद केन्द्र, बालोतरा द्वारा फिल्म स्क्रीनिंग कार्यक्रम में दी गई। कार्यक्रम में बालोतरा नगर के यूट्यूबर्स, ई-कंटेंट, विडियोज, शॉर्ट फिल्म मेकर व सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कार्य करने वाले कॉलेज विद्यार्थियों ने भाग लिया।

गीता दर्शन

श्रीकृष्ण कहते हैं–

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गऽस्त्वकर्मणि।। (2/47)

हे अर्जुन! तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल की कामना मत कर तथा कर्मों केत्याग की इच्छा भी मत कर।

समाचार यह भी है....

1. उपभोक्ता मंत्रालय द्वारा जारी आदेशानुसार सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भ्रामक विज्ञापन देने पर 6 माह से 2 वर्ष तक प्रोडक्ट का प्रचार करने से रोका जा सकेगा तथा 10 से 50 लाख रुपये तक का जुर्माना भी लग सकता है।
2. डिजिटल भुगतान के मामले में भारत ने दुनिया के 4 बड़े देशों को पीछे छोड़ दिया है। दिसम्बर 2022 में भारत का डिजिटल पेमेंट ट्रांजेक्शन 1.5 ट्रिलियन डॉलर रहा, जो अमरीका, जर्मनी, फ्रांस और ब्रिटेन से अधिक है। विगत 3 वर्षों में यह वृद्धि देखी गई है।
3. अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी 'नासा' ने भारतीय मूल के एयरोस्पेस उद्योग विशेषज्ञ एसी चारणिया को प्रमुख टेक्नोलॉजिस्ट नियुक्त किया।
4. केरल के इस्लामी संस्थान 'द एकेडमी ऑफ शरिया एण्ड एडवांस स्टडीज' में कक्षा 11 व 12 की पाठ्यक्रम में संस्कृत, व्याकरण और श्रीमद्भगवद्गीता को किया शामिल। जून 2023 से यह पाठ्यक्रम लागू होगा।

आओ संस्कृत सीखें - 15

संस्कृत	हिंदी
● **वैद्यं दर्शयतु।**	डॉक्टर को दिखायें।
● **तत्र सम्यक् पश्यतु।**	वहाँ ठीक से देखिए।
● **सा किं पृच्छति?**	वह क्या पूछ रही है?
● **अहं भवन्तं न त्यजामि।**	मैं आपको नहीं छोड़ूँगा।

कुकिंग टिप्स

● गरम रोटियों को कैसरोल में रखने के साथ ही उसमें एक अदरक का छोटा टुकड़ा डाल दें इससे रोटी जल्दी खराब नहीं होगी।

● राजमा, चना, मटर जैसी सब्जियों को उबालते या भिगोते समय थोड़ा बेकिंग सोडा मिलाएं इससे पकने में कम समय लगेगा।

घरेलू नुस्खा

सर्दी, जुकाम, खांसी और बलगम से निजात पाने के लिए लोंग, सूंठ, काली मिर्च, तेजपत्ता, दालचीनी और तुलसी को आवश्यकतानुसार पानी में उबालकर तैयार काढ़े को छानकर दिन में 3-4 बार पीने से उक्त बीमारी में जल्द आराम मिलता है।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस (21 फरवरी)

विश्व में भाषायी एवं सांस्कृतिक विविधता और बहुभाषिता को बढ़ावा मिले, इस हेतु प्रतिवर्ष 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है। इसकी शुरुआत यूनेस्को की ओर से 17 नवम्बर, 1999 को की गई थी। दुनिया भर में अपनी भाषा-संस्कृति के प्रति लोगों में लगाव पैदा करना और जागरूकता फैलाना यही इस दिवस का उद्देश्य है।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (28 फरवरी)

विज्ञान से होने वाले लाभों के प्रति समाज में जागरूकता लाने, वैज्ञानिक सोच पैदा करने तथा वैज्ञानिक प्रवृत्ति को बढ़ावा देकर नवीन गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् तथा विज्ञान प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तत्वावधान में हर साल 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है।

भारतीय भौतिकी वैज्ञानिक चन्द्रशेखर वेंकट रमण ने 28 फरवरी,1928 को 'रमन प्रभाव' खोज की पुष्टि की थी। इसी खोज के लिए उन्हें 1930 में नोबेल पुरस्कार दिया गया था।

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें – **सामान्य**– यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ**– यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम** – यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. क्रांतिकारी मन्मथनाथ गुप्त का जन्म उत्तर प्रदेश में किस स्थान पर हुआ था?
2. बंगाल के क्रांतिकारी कन्हाई लाल दत्त को फांसी का पुरस्कार कब मिला?
3. ढाका में अनुशीलन समिति का नेतृत्व कर रहे क्रांतिकारी पुलिन बिहारी दास के प्रमुख सहयोगी कौन थे?
4. असम के क्रांतिकारी मनीराम दीवान को जोरहाट की जेल में कब फांसी दी गई?
5. चटगांव (बंगाल) के वे क्रांतिकारी कौन थे जिन्होंने अपनी बाल मंडली के साथ मिलकर ब्रिटिश शस्त्रागार पर हमला कर लूट लिया था?
6. क्रांतिकारी अवध बिहारी को 1मई,1915 को किस जेल में फांसी दी गई?
7. फांसी पर चढ़ते समय क्रांतिकारी खुदीराम बोस के अंतिम शब्द क्या थे?
8. 63 दिनों की भूख हड़ताल के बाद लाहौर सेंट्रल जेल में बलिदान हुए क्रांतिकारी कौन थे?
9. जलियांवाला बाग नरसंहार के कितने वर्षों बाद उधम सिंह ने जनरल डायर की हत्या की?
10. 'हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सभा' का गठन करने वाले क्रांतिकारी कौन थे?

उत्तर – पृष्ठ 18 पर

बोध कथा

सच्ची शिक्षा

तीन शिष्यों की शिक्षा पूरी हो चुकी थी। गुरुजी ने दक्षिणा व परीक्षा लिए बिना तीनों शिष्यों को घर जाने को कहा। तीनों शिष्यों को आश्चर्य हुआ किन्तु गुरु को प्रणाम कर वे चल पड़े। मार्ग में एक जगह कांटे बिखरे पड़े थे। तीनों यह देखकर रुक गए।

पहला बोला हमें इन कांटों से बचकर चलना चाहिए और धीरे-धीरे बचता हुआ पार हो गया। दूसरा जो अच्छा खिलाड़ी था, कूदता-फांदता पार हो गया। तीसरे शिष्य का विचार अलग था। वह बिखरे कांटों को चुन-चुनकर हटाने लगा। उसके हाथ व पांव में कुछ कांटे चुभ गए लेकिन उसने कोई परवाह नहीं की।

धीरे-धीरे उसने सारे कांटे साफ कर दिए और फिर वह अपने साथियों के साथ कुछ कदम ही चला था कि उन्होंने देखा कि सामने गुरुदेव खड़े हैं। उन्होंने दोनों शिष्यों से कहा कि तुम दोनों की शिक्षा पूरी नहीं हुई है।

तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए मैंने ही कांटे रास्ते में बिछवाए थे। तुम दोनों परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सके।

रास्ते में कांटो को चुनकर हटा देना और दूसरों के लिए मार्ग सुगम कर देना ही जीवन है। जो यह नहीं सीख पाया उसे अभी और शिक्षा लेनी होगी और जिसने यह सीख लिया उसने सच्ची शिक्षा प्राप्त कर ली है। यह कहकर उन्होंने तीसरे शिष्य को आशीर्वाद देकर विदा किया।

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी -33)

(कृपया अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो भी वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( ) 3.( )
4.( ) 5.( ) 6.( )
7.( ) 8.( ) 9. ( )
10.( )

नाम .....

पिता का नाम.....

उम्र ..... पूर्ण पता .....

.....

.....पिन.....

मोबाइल नं. .....

बाल प्रश्नोत्तरी -33

जीतें पुरस्कार। बाल मित्रों! 16 जनवरी का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 79765 82011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम पाथेय कण में प्रकाशित किए जाएंगे तथा प्रथम 5 विजेताओं की फोटो प्रकाशित कर उन्हें पुरस्कृत भी किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। **उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - 20 फरवरी, 2023**

1. प्रसिद्ध धारावाहिक 'महाभारत' में श्रीकृष्ण की भूमिका किस अभिनेता ने निभाई?
(क) विजय भारद्वाज (ख) निमेष भारद्वाज (ग) नितीश भारद्वाज (घ) निधेश भारद्वाज

2. विविध प्रकार की कला-विधाओं से जुड़े कलाकारों की राष्ट्रीय संस्था कौन सी है?
(क) कला संवाद (ख) कला भारती (ग) संस्कृत भारती (घ) संस्कार भारती

3. देशबंधु चितरंजन दास को मातृभूमि की सेवा की अभिलाषा से सुभाष बाबू ने किस वर्ष पत्र लिखा?
(क) 1921 (ख) 1919 (ग) 1912 (घ) 1915

4. लालाजी की मृत्यु का बदला क्रांतिकारियों ने किस अंग्रेज अधिकारी को मार कर लिया?
(क) स्कॉट (ख) साण्डर्स (ग) चैम्सफोर्ड (घ) साइमन

5. भारत सरकार ने लाला लाजपत राय पर डाक टिकट किस वर्ष में जारी किया?
(क) 1965 (ख) 1928 (ग) 1966 (घ) 1967

6. स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए 'स्वावलंबी भारत अभियान' किसके द्वारा चलाया जा रहा है?
(क) स्वदेशी जागरण मंच (ख) धर्मजागरण मंच (ग) स्वरोजगार मंच (घ) अपना मंच

7. प्रोजेक्ट 'नमामि गंगे' परियोजना का शुभारम्भ किस वर्ष में किया गया था?
(क) वर्ष 2018 (ख) वर्ष 2015 (ग) वर्ष 2012 (घ) वर्ष 2014

8. किसान उत्पादक संगठन (पीएफओ) की स्थापना राजस्थान के किस जिले में हुई है?
(क) सवाई माधोपुर (ख) जयपुर (ग) फागी (घ) टोंक

9. विश्व कैंसर दिवस कब मनाया जाता है?
(क) 4 फरवरी (ख) 2 फरवरी (ग) 9 फरवरी (घ) 12 फरवरी

10. बांसवाड़ा जिले के किस गांव को संघ द्वारा 'प्रभात गांव' घोषित किया गया है?
(क) भेमई (ख) कोटड़ा (ग) कुशलगढ़ (घ) परतापुर

बाल प्रश्नोत्तरी -30 के परिणाम

प्रिया

नेहा

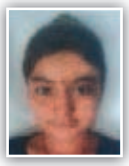
तनीशा

दिव्यांशी

साक्षी

1. प्रिया सैनी, नागौर
2. नेहा चौबदार, कोटा
3. तनिशा खण्डेलवाल
4. दिव्यांशी जंगम, बारां
5. साक्षी सोलंकी, नागौर
6. दिव्यांश शर्मा, जोधपुर
7. दिनेश देसाई, जालोर
8. अभिमन्यु सिंह, अजमेर
9. सलोनी सोलंकी, श्रीगंगानगर
10. अन्नत फरक्या,पिपलिया, मध्यप्रदेश

प्रथम 5 विजेताओं को पुरस्कार भेजे जा रहे हैं।

सही उत्तर 1.(ख) 2.(क) 3.(ख) 4.(क) 5.(ग) 6.(ख)7.(क) 8 (क) 9.(ग)10.(ख)

उत्तर स्वातंत्र्य समर प्रश्नोत्तरी - 1. वाराणसी 2. 10 नवम्बर,1908 3. पी.मित्रा 4. 26 जनवरी,1858 5. सूर्यसेन 6. अम्बाला सेंट्रल जेल 7. वंदेमातरम् 8. जतिन्द्र नाथ दास 9. 21 वर्ष 10. भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु

गोविंदाचार्य जी एवं भैया जी
श्रीकृष्ण चन्द्र भार्गव (दाएं से प्रथम व द्वितीय) के साथ

राजस्थान के क्षेत्र कार्यवाह रहे
दादा भाई गिरिराज शास्त्री के साथ

विश्व मंगल गो- ग्राम यात्रा पुस्तिका का
विमोचन करते हुए

वर्तमान पाथेय भवन के भूमि पूजन कार्यक्रम में सांभर के
योगी रमणनाथ जी महाराज के साथ आगमन

भूमि पूजन कार्यक्रम में
शिला रखते हुए

भूमि पूजन कार्यक्रम में मंचासीन अतिथियों के साथ

पाक्षिक
पाथेय कण
1-15 फरवरी, 2023
(27 जनवरी को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

आगामी पक्ष के विशेष अवसर

फाल्गुन कृष्ण 11 से फाल्गुन शुक्ल 9 तक, वि.सं.-2079 (16 से 28 फरवरी, 2023)

जन्म दिवस

16 फरवरी (1915)	- इतिहासकार ठाकुर रामसिंह जयंती
फाल्गुन कृ. 11 (16 फर.)	- द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी जयंती
फाल्गुन कृ. 11 (16 फर.)	- 11वें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ जयंती
फाल्गुन कृ. 14 (19 फर.)	- 12वें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य जयंती
19 फरवरी (1630)	- छत्रपति शिवाजी महाराज जयंती
फाल्गुन शु.2 (21 फरवरी)	- श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती
21 फरवरी (1878)	- श्री माँ जयंती (महर्षि अरविंद की शिष्या)
23 फरवरी (1881)	- सरदार अजीत सिंह जयंती
फाल्गुन शु.5(24 फरवरी)	- महर्षि याज्ञवल्क्य जयंती
फाल्गुन शु.6 (25 फरवरी)	- माता शबरी जयंती
फाल्गुन शु.8 (27 फरवरी)	- संत दादूदयाल जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

17 फरवरी (1881)	- क्रांतिवीर लहूजी सालवे की पुण्यतिथि
17 फरवरी (1993)	- रानी माँ गाइदिन्ल्यू स्मृति दिवस
17 फरवरी (1883)	- वासुदेव बलवंत फड़के का बलिदान
21 फरवरी (1829)	- कित्तूर की रानी चेन्नम्मा का बलिदान
21 फरवरी (1910)	- वीरेन्द्र नाथ दत्त का बलिदान दिवस
24 फरवरी (1568)	- जयमल, फत्ता तथा कल्ला जी का बलिदान
26 फरवरी (1966)	- वीर सावरकर की पुण्यतिथि
27 फरवरी (1931)	- चन्द्रशेखर आजाद का बलिदान
28 फरवरी (1884)	- वीर सुरेन्द्र साईं का बलिदान

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर

21 फरवरी	- अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस
23 फरवरी (1568)	- चित्तौड़ का तीसरा साका
28 फरवरी	- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

सांस्कृतिक पर्व/त्योहार

18 फरवरी	- महाशिवरात्रि पर्व

पंचांग -फाल्गुन (कृष्ण-पक्ष)

युगाब्द-5124, वि.सं.-2079, शाके-1944 (6 से 20 फरवरी,2023)

संकष्ट चतुर्थी व्रत-9 फरवरी, **सीताष्टमी**-14 फरवरी, **विजया एकादशी व्रत (स्मार्त)**-16 फरवरी, **विजया एकादशी व्रत (वैष्णव)**-17 फरवरी, **शनि प्रदोष व्रत**-18 फरवरी, **महाशिवरात्रि व्रत**-18 फरवरी, **देवपितृकार्य अमावस्या (सोमवती)**-20 फरवरी, **शिव खप्पर पूजा**-20 फरवरी, **पंचक प्रारम्भ**-19 फरवरी (रात्रि 1.14 बजे)

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 6 फरवरी स्वराशि **कर्क** में, 7-8 फरवरी **सिंह** राशि में, 9 से 11 फरवरी **कन्या** राशि में 12-13 फरवरी **तुला** राशि में, 14-15 फरवरी नीच की राशि **वृश्चिक** में, 16-17 फरवरी **धनु** राशि में 18-19 फरवरी **मकर** राशि में तथा 20 फरवरी को **कुंभ** राशि में गोचर करेंगे।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष में वक्री **गुरु** और **शनि** पूर्ववत क्रमशः मीन व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु**, **केतु** व **मंगल** भी क्रमशः मेष, तुला व वृष राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** 13 फरवरी प्रातः 9.45 बजे मकर से कुंभ राशि में प्रवेश करेंगे। **बुध** देव 7 फरवरी प्रातः 7.27 बजे धनु से मकर राशि में प्रवेश करेंगे। **शुक्र** 15 फरवरी को रात 8.02 बजे कुंभ से मीन राशि में प्रवेश करेंगे।

जन्म दिवस पर शत शत नमन

महान रणनीतिकार
शिवाजी महाराज
19 फरवरी

(1630-1680)

12वें जैन तीर्थंकर
वासुपूज्य
फाल्गुन कृ. 14 (19 फरवरी)

महान साधक व विचारक
रामकृष्ण परमहंस
फाल्गुन शु. 2 (21 फरवरी)

(1836-1886)

प्रतिष्ठा में

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 फरवरी, 2023 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर